# सामान्य अध्ययन

निर्धारित समय: 1 घंटा 30 मिनट
*Time allowed: 1 Hour 30 Minutes*

अधिकतम अंक: 125
*Maximum Marks: 125*

**Name:** Bharat Jai prakash Meena **Mobile Number:** _____

**Medium (English/Hindi):** _____ **Email:** _____

**Center & Date:** _____ **UPSC Roll No.:** _____

## प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

*कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:*

*सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।*

*प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।*

*प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।*

*उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।*

## QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*All the questions are compulsory.*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.*

केवल मूल्यांकनकर्त्ता द्वारा भरा जाए *(To be filled by Evaluator only)*

| Question Number | Marks |
|---|---|
| 1. | |
| 2. | |
| 3. | |
| 4. | |
| 5. | |
| 6. | |
| 7. | |
| 8. | |
| 9. | |
| 10. | |
| Grand Total ( सकल योग ) | |

_____

मूल्यांकनकर्त्ता ( हस्ताक्षर )

*Evaluator (Signature)*

_____

पुनरीक्षणकर्त्ता ( हस्ताक्षर )

*Reviewer (Signature)*

drishti | दृष्टि The Vision

## Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

1.

जहां सादगी नहीं, वहां महानता नहीं।

भारतीय ऐतिहासिक मिथक रामायण में राम का पात्र, एक आदर्श राजा, पति, भाई, मित्र एवं बेटे की दृष्टि से उत्कृष्ट माना जाता है।

राम द्वारा 14 वर्ष के अपने वनवास के दौरान जंगलों में रहते हुये एक सामान्य साधु-सन्यासी का वेश धारण किया गो साथ ही शबरी के राम के प्रति प्रेम को देखते हुये उन्होनें झूठे बेर तक खाये एवं निशाद जैसे वनवासियों के साथ भी मित्रतापूर्ण व्यवहार किया और ऋषि-मुनियों का आशीर्वाद लेते हुये अपना वनवास व्यतीत किया। दूसरी ओर रामायण में ही एक अन्य पात्र रावण का है। जो स्वर्णनगरी लंका का राजा था तो साथ ही बलशाली होने के साथ-साथ महान विद्वान भी था।

इसके बावजूद राम को जहां मर्यादापुरुषोत्तम भगवान भी राम के रूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

में जाना जाता है तो वहीं रावण को रामायण के खलनायक के रूप में। इसका प्रमुख कारण राम की सादगी एवं रावण का अहंकार है। इसी कारण राम को महान, जबकि; रावण को बुराई का प्रतीक माना जाता है। उपरोक्त उदाहरण दर्शाता है कि जहां सादगी नहीं, वहां महानता नहीं।

आगे बढ़ने से पहले यह जानना जरूरी है कि सादगी क्या होती है? तथा जीवन में सादगी कैसे आती है।

भारतीय समाज में किसी व्यक्ति की सादगी एवं महानता को दर्शाने हेतु प्रायः कहा जाता है- "सादा जीवन, उच्च विचार।" अर्थात् जीवन में कम सुख-सुविधा रहते हुये भी व्यक्ति अपने उच्च विचारों के माध्यम से महान बन सकता है।

मध्यकालीन संत कबीर आज भी अपने सादा जीवन एवं उच्च विचारों के कारण सम्मानीय हैं। जुलाहा जाति से होते हुये भी



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

कबीर अपने व्यंग्यपूर्ण विचारों एवं तीखी अभिव्यक्ति के कारण महान कहे जाते हैं। कबीर द्वारा मध्यकालीन समाज में जहां धार्मिक कट्टरता एवं अंधविश्वास अपने चरम पर था ऐसे में अपनी वाणी के माध्यम से विरोध करना, कबीर के साहस एवं महानता की ही अभिव्यक्ति है। कबीर का यह दोहा इस बात की पुष्टी भी करता है-

"पाहन पूजे हरी मिले, तो मैं पूजू पहाड़;
ताते या चाकी भली, पीस खाय संसार।"

अर्थात् पत्थर की पूजा करने से यदी भगवान मिलने लगे तो मैं पूरा का पूरा पहाड़ की ही पूजा कर लूंगा, इससे तो वह चाकी ही महान है, जिससे संसार अपना पेट तो भर लेता है।

मध्यकालीन समय में मूर्तिपूजा एवं रूढ़िवादिता का विरोध करना, कबीर को क्रांतिकारी कवि बनाने के साथ-साथ महान समाज सुधारक बनाता



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

है जिसे भारतीय समाज को समझने में सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन तक का इंतजार करना पड़ा था।

जीवन में सादगी हेतु सिर्फ सदा विचार एवं सुख - सुविधा से हीन जीवन ही पर्याप्त नहीं है बल्कि; 'सबका साथ, सबका विकास' की दृष्टि भी अति - आवश्यक है। मुगल सम्राट अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति, जो सबके साथ की बात करती है, इसकी पुष्टी के लिये अकबर ने स्वयं भी अन्तर- धार्मिक विवाह किया, यही कारण है कि तात्कालिक समाज में अधिकतर आबादी हिन्दू होते हुये भी अकबर, सर्व - समाज का शासक था और आज भी अकबर को महान कहा जाता है, जबकि अपनी धार्मिक कट्टरता के कारण



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright - Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



औरंगजेब को समान दृष्टि से नही देखा जाता है।

जीवन में सादगी का एक प्रमाण यह भी है कि व्यक्ति जीवन की कठिन परिस्थितियों में कैसे व्यवहार करता है तथा अपने लक्ष्य पर अडिग रहकर सुख - दुःख को समान रूप से ग्रहण करता है। महाराणा प्रताप ऐसे ही एक प्रतापी राजा हुये जो अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिये जीवन - भर संघर्षरत रहे तथा जंगलो में भटके और आदिवासियों के साथ रहकर घास -फूंस की रोटी के माध्यम से अपना पेट भरते रहे। इसका चरम -स्तर तो इस प्रसंग से समझ सकते है।

जब एक दिन अपने पुत्र अमरसिंह के लिये, महाराणा प्रताप द्वारा बनायी गयी घास की



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright - Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रोटी को जंगली बिल्ली ले जाती है और कुंवर अमरसिंह भूख के मारे बिलख पड़ते हैं। ऐसी परिस्थितियों में भी स्वयं को कर्तव्यपथ पर अडिग बनाये रखना महानता की ही निशानी है जिसके लिये प्रताप, महाराणा प्रताप कहे जाते हैं।

जीवन में सादगी का तात्पर्य समन्वयकारी दृष्टि एवं समावेशिता से भी है जो वर्ग-संघर्ष की बात न करके वर्ग-समन्वय की बात करती है और सर्वोदय के माध्यम से सभी के कल्याण में विश्वास करती है। महात्मा गांधी की समन्वयकारी दृष्टि एवं समता के विचार ने ही उन्हें, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का शिखर पुरुष बनाया था।

गांधीजी द्वारा सम्पन्न परिवार से होते हुये भी आम-जनता के



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation



उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

3. साथ स्वयं को जोड़ने के लिये अस्पृश्यता का विरोध, मंदिर सुधार कार्यक्रम, महिला शिक्षा की बात करना तथा वर्धा शिक्षा नीति के माध्यम से कौशल विकास पर बल देना तो साथ ही गरीबी एवं भुखमरी से पीड़ित आम-जनता की तरह एक धोती पहनना जैसे कार्य उनकी सादगी को दर्शाते हैं। यही कारण है कि उनके आह्वान पर जनता एकजुट हुई और जाति, धर्म, लिंग, स्थान एवं भाषा से ऊपर उठकर औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ एकजुट हुई। तो दूसरी ओर गांधीजी की सादगी ही थी जिसके कारण सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रतीक चिह्न के रूप में गांधीजी ने सभी विभाजनकारी तत्वों से ऊपर उठकर नमक को चुना, जिसने अमीर-गरीब, किसान-जमींदार, श्रमिक-पूँजीपती वर्ग सभी को आंदोलन



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

से जोड़ने का कार्य किया।
विचारों एवं संस्कृति में साझी
का अभाव प्रायः शासन के लिये
भी कमजोरी का कारण बन
जाता है। औपनिवेशिक शक्ति
के रूप में ब्रिटेन ने लगभग
आधी दुनियां पर शासन किया
तथा कहा जाता है कि "ब्रिटेन
का सूर्य कभी अस्त नहीं
होता था।" परंतु, श्वेत नस्ल
के श्रेष्ठता के सिद्धांत एवं
नस्लवादी नीतियों के कारण
औपनिवेशिक ब्रिटेन ने व्यापक
रूप से अत्याचार किये।

यही कारण रहा कि इतने
लम्बे समय तक शासन करने
के बावजूद भी ब्रिटेन दुनियां
में वह सम्मान हासिल नहीं
कर पाया।

जीवन का साझी का
एक महत्वपूर्ण पहलू है - क्षमा


www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

करना। प्रायः यह कहा जाता है कि क्षमा करना कमजोरी की निशानी है, जबकि, बदला लेना ताकतवर होने की निशानी है। जो कि सत्य नहीं है।

दक्षिण - अफ्रीका में शासन की रंगभेद की नीति के खिलाफ जीवन - पर्यंत संघर्ष करने वाले नोबल विजेता - नेल्सन मंडेला इसके सबूत है। 28 वर्ष तक जिस शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुये वे जेल में रहे, अफ्रिका में रंगभेद की नीति की समाप्ति के पश्चात, नस्लभेदी आधार पर अत्याचारियों को माफ करना, कमजोरी की निशानी नहीं है बल्कि, महानता को दर्शाती है। यही कारण है कि नेल्सन मंडेला आज भी पूरी दुनिया में सम्मान पाते है।

साझी का पहलू सिर्फ क्षमा करना ही नहीं है, बल्कि


www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अपनी गलती मानकर क्षमा मांगना एवं भविष्य में ऐसी गलती न दोहराना भी है।

कनाड़ा में कैथोलिक चर्च द्वारा स्थापित मिशनरी विद्यालयों में स्वदेशी लोगों के खिलाफ हुआ अत्याचार वर्तमान में भी चर्चा का विषय है। परंतु, कैथोलिक चर्च के प्रमुख पोप-फ्रांसिस द्वारा मिशनरीयों द्वारा किये गये अत्याचारों को स्वीकार करने के साथ-साथ, स्वदेशी लोगों से मांफी मांगना, पोप की महानता का ही परिचायक है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति और समाज शिखर पर पहुँचने के बाद भी सहिष्णुता, शालीनता,



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व जैसे गुणों को धारण किये रहता है वही महान कहलाता है और महानता को बनाये रखता है वर्तमान समय में जब उपभोक्तावादी संस्कृति, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसी समस्याएँ जीवन के केन्द्र में है ऐसे में सादगीपूर्ण जीवन ही व्यक्ति को महानता के शिखर पर पहुँचा सकता है।



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

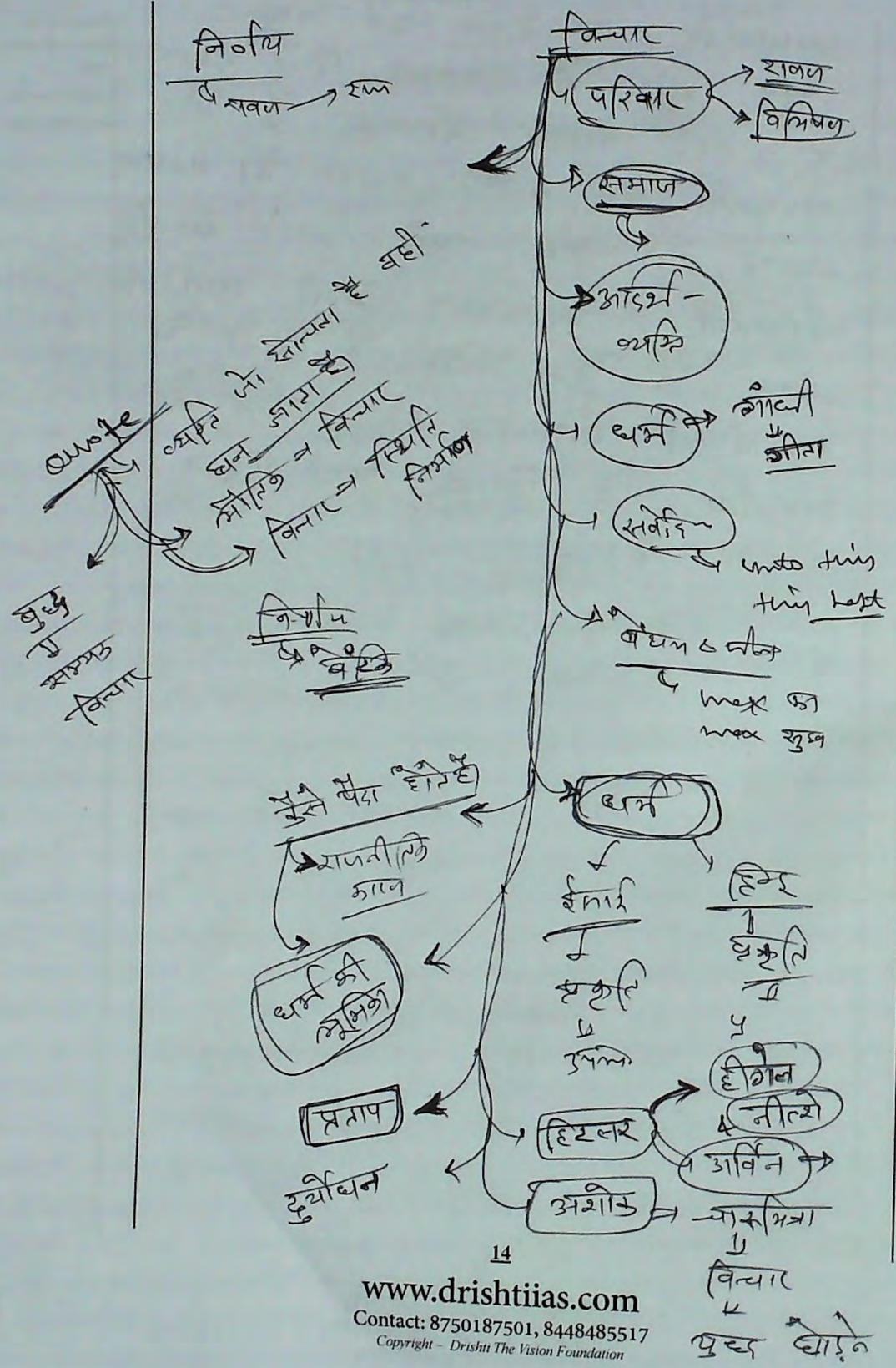

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

5. निर्णय आपकी अपनी आवाज होती है, जबकि विचार किसी और के आवाज की प्रतिध्वनि होती है।

प्राचीन भारतीय मिथक रामायण के नायक भगवान राम द्वारा, माता कैकई के द्वारा महाराज दशरथ से मांगे गये वचन के फलस्वरूप ही वनवास जाने का निर्णय लिया गया। यह विचार भले ही कैकई के मस्तिष्क की उपज रहा हो। परंतु, वनवास जाने का निर्णय पूर्णतः भगवान राम का था।

ऐसी ही एक कहानी रामायण के खलनायक रावण की है जिसने अपनी बहन सुर्पनखा के साथ लक्ष्मण द्वारा किये गये व्यवहार के विचार तथा सुंदर स्त्री की चाह के विचार ने ही, रावण को सीताहरण के लिये प्रेरित किया था।

उपरोक्त दोनो उदाहरण दर्शाते



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

है कि "निर्णय आपकी अपनी आवाज होती है, जबकि विचार किसी और के आवाज की प्रतिध्वनि होती है।"

व्यक्ति द्वारा लिये गये निर्णय के पीछे हमेशा ही अपनी आवाज हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। व्यक्ति के निर्णय, कई बार कर्तव्यपालन एवं देश तथा समाज के हितो के अनुसार भी हो सकते है जो कि आवश्यक नही है कि अपनी आवाज के अनुकूल हो। महाभारत में गंगा पुत्र भीष्म द्वारा आजीवन हस्तिनापुर के राजा की आज्ञा मानना तथा सिंहासन की रक्षा के लिये लड़ना कर्तव्यपरायणता ही थी जिसके कारण वे पांडवों के खिलाफ महाभारत का युद्ध लड़े। यद्यपि पांडव, उन्हे कौरवों से भी ज्यादा प्रिय थे। तो साथ ही आजीवन अविवाहित रहने का भीष्म द्वारा लिया गया प्रण, अपने पिता महाराज शांतनु की आवाज की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright Drishti The Vision Foundation

ही प्रतिध्वनि था।

व्यक्ति द्वारा लिये गये निर्णय के पीछे, व्यक्तिगत हित या स्वार्थपरता भी हो सकती है। उदाहरण के लिये आरक्षण विरोधी कोई व्यक्ति यदि upsc के साक्षात्कार में उपस्थित होता है तो इस बात की संभावना अधिक है कि वह व्यक्तिगत हित में, संवैधानिक मान्यता का समर्थन करते हुये आरक्षण को सही बताये। जो कि यह दर्शाता है कि निर्णय हमेशा अपनी आवाज के अनुसार नहीं होते है।

सामान्यतः निर्णय, आपकी अपनी आवाज होते है परंतु, इसकी पहचान कठिन परिस्थितियों में ही होती है। उदाहरण के लिये शुद्ध शाकाहारी व्यक्ति, यदि समूह के मध्य में द्वीप पर फंस जाये तो ऐसी स्थिति में उसके पास दो विकल्प है पहला, कि वह खाद्य-सामग्री (शाकाहार)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

6. के अभाव में टापू पर ही भूखा मर जाये। दूसरा विकल्प यह है कि वह शाकाहार के अपने मूल्य को त्यागकर, अपने जीवन हेतु मछली पकड़े और भोजन के रूप में ग्रहण करे। इस उदाहरण के माध्यम से हम यह जान पाये हैं कि कठिन परिस्थितियों ही इस बात का वास्तविक रूप में निर्धारण करती है कि व्यक्ति का निर्णय अपनी आवाज के अनुसार होगा, अन्यथा नहीं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

व्यक्ति द्वारा निर्णय अपनी आवाज के अनुसार लिया जायेगा अन्यथा नहीं, इसका निर्धारण अभिवृत्ति के माध्यम से ही होता है। जिस बात अथवा विचार के लिये हमारी अभिवृत्ति सकारात्मक होती है तथा हमारे स्वार्थ की भी पूर्ति हो उसे प्रायः हम वही निर्णय लेते हैं।



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

विचार एवं अभिवृत्ति के अनुसार निर्णय लेने के मध्य का जुड़ाव सामान्य परिस्थितियों में बना रहता है जब तक कि उनके मध्य अलगाव हेतु कोई विशेष कारण न हो।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इसी प्रकार यदि हम विचार के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि विचार किसी और के आवाज की प्रतिध्वनि होती है। उदाहरण के लिये - महात्मा बुद्ध (पूर्ववर्ती -सिद्धार्थ) द्वारा, प्रसिद्ध कहानी के अनुसार एक रोगी, मृत व्यक्ति तथा वृद्ध व्यक्ति को देखकर ही घर छोड़ने तथा सन्यास का विचार उनके मन में आया था जो कि एक रोगी व्यक्ति की पीड़ा रूप आवाज की प्रतिध्वनि तथा वृद्ध व्यक्ति की बुढ़ापा जनित असमता की आवाज की ही प्रतिध्वनि का परिणाम थी।

इसी प्रकार हिटलर द्वारा जर्मनी में तानाशाही शासन की स्थापना करना, हीगेल के राज्य की



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

सर्वोच्चता के सिद्धांत की विकृत व्याख्या का ही परिणाम रहा तो साथ ही डार्विन के प्राकृतिक वरण के सिद्धांत की विकृत व्याख्या ने लाखों यहूदियों के नरसंहार हेतु प्रेरित किया तो साथ ही नीत्शे के युद्ध दर्शन से प्रभावित हिटलर ने पूरे विश्व को एक महायुद्ध में झोंक दिया था। जो यह दर्शाता है कि किसी और की आवाज की प्रतिध्वनि से अपना विचार हमेशा सही निर्णय लेने हेतु प्रेरित करे यह आवश्यक नहीं है।

प्रायः यह सवाल उठता है कि विचारों का निर्माण कैसे होता है? इसके संबंध में अनेक मत है। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार भौतिक परिस्थितियाँ ही विचार को

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

7.

जन्म देती है। उदाहरण के लिये यदि भीमराव अम्बेडकर, दलित वर्ग में पैदा हुये तथा जातिगत उत्पीड़न को भोगने के कारण ही उनके मन में जातिगत उत्पीड़न के विरुद्ध विचार हुये।

तो साथ ही पूँजीवादी विचारधारा के अनुसार भौतिक परिस्थितियाँ, विचारों को नहीं; बल्कि, विचार, भौतिक परिस्थितियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिये थॉमस एडीसन द्वारा बल्ब के आविष्कार से पूर्व उनके मन में बल्ब का विचार आया होगा।

नये विचार के जन्म लेने में यह भी स्थापित मान्यता है कि धर्म की व्यापक भूमिका होती है। उदाहरण के लिये पश्चिम के ईसाई धर्म की यह मान्यता रही है कि प्रकृति का निर्माण ईश्वर द्वारा मानव की सुख-सुविधा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

एवं उपभोग की वस्तु के रूप में क्रिया है तो साथ ही भारतीय धर्मों की प्रायः यह मान्यता है कि प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे के पूरक है अर्थात् प्रकृति मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति का साधन मात्र न होकर स्वयं में एक साध्य है।

इसी कारण पश्चिम में हुई व्यापक भौतिक प्रगति ने पर्यावरण को हानि पहुँचाई जिसके परिणाम के रूप में हम वर्तमान में जलवायु संकट को देख रहे हैं।

धर्म का एक व्यापक प्रभाव किसी समाज के आर्थिक विचार एवं निर्णयों में दिखाई देता है। उदाहरण के लिये बौद्ध, जैन एवं रोमन कैथोलिक धर्म ब्याज पर पैसा देना



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उचित मानते है। इसी के कारण पश्चिम में जहाँ पूँजीवादी विचारधारा का उदय हुआ तो वहीं भारत में बौद्ध एवं जैन धर्म के अनुयायी प्रमुख व्यापारी के उभरकर सामने आये तो वहीं इस्लाम में ब्याज पर पैसा देना हराम माने जाने के कारण आर्थिक उन्नति, पश्चिमी समाज की तुलना में कम रही है तथा आज भी इस्लामिक देश दुनियां में सबसे गरीब माने जाते है।

किसी भी समाज में बौद्धिक एवं दार्शनिकों की विचारधारा तथा विचार भी भविष्य को निर्धारित करते है। उदाहरण के लिये - सुकरात द्वारा अपने विचारों के लिये अडिग रहना तथा व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा का परिचय देने के कारण, सुकरात के विचार आज भी जीवित है



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

8. जबकि, तत्कालीन राजतंत्र ने सुकरात को अपने विचारों के लिये मौत की सजा दी थी।

पश्चिम के अनेक दार्शनिकों के अनुसार जिस समाज में स्वतंत्र अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया जाता है। वह निरंतर ही प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है इसीलिये कहा जाता है कि ~~"अनुकरण~~

"अनुकरण की प्रवृत्ति तो दुनियाँ के हर समाज में पाई जाती है परंतु, चर्चा एवं वाद - विवाद की प्रवृत्ति कुछ ही समाजों में मिलती है।"

~~निष्कर्षतः गांधीजी का यह कथन~~

इसीलिये वाद एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करना चाहिये तथा स्वैच्छिक रूप से

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

वाद - विवाद की संस्कृति को प्रोत्साहित करना चाहिये। क्योंकि "व्यक्ति अपने विचारों का ही उत्पाद होता है" - गांधी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)



www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation